रात्रि क्लास 2-7-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

बच्चे यहां रहते हैं। घर में आते हैं। मां-बाप को तो अपना घर समझ जहां देखो तकलीफ है तो बतानी चाहिए। बाबा यह सहुलियत होनीचाहिए। यह होना चाहिए। तो बाबा थैंक्स देंगे। अच्छी राय निकालनी है।

बच्चे समझ रहे हैं अच्छी तरह से पुरानी दुनिया का दिन-प्रति दिन टाईम थोड़ा होता जाता है। बाबा रोज बच्चों को देखते हैं पदमा-पदमभाग्यशाली। यहां जो करोड़पदमपति हैं वह तो गरीब ही होते जावेंगे। मकान का दाम जास्ती हो गया है। नोट कागज है। बैंक में पड़े हैं। उनकी मिलकीयत तो ठिकर भितर है। वहां तो शाहुकार होते हैं। मकान सोने हीरों से जड़ित। वहां तो सभी सोने के ही होंगे। चांदी की भी नहीं। सच्च-खण्ड में तुम पदमपति बनते हो। यहां मनुष्यों के कर्म विकर्म होते हैं। पद भी भ्रष्ट। तुम जानते हो हम विकर्माजीत भी बनते हैं। धन दौलत भी सच्चा साल्ह हो गा। बाप समझाते हैं यहां की सारी मिलकीयत मिल जावेंगी मिट्टी में। तो झूठ हो गये हैं ना। तुम सच्चे बनते हो। बड़ी विशाल बुधि चाहिए। जो कुछ देखने में आता है वह कुछ न रहेगा। समुद्र खा लेंगे। अनायास ही मौत होता है ना। समुद्र की उछल आवेंगी। बम्बई को भी हप कर लेंगे। कितने बड़े2 खण्ड हैं। सभी पानी में चले जावेंगे। बाकी निशानी रहेंगी। बाकीकुछ रहेगा नहीं। तुम बच्चों में यह ज्ञान होना चाहिए सिवाय हमारे भारत के सो भी बहुत छोटा भारत होगा। थोड़ी जगह लेते होंगे। फिर झाड़ बुधि को पाते हैं। तुम बच्चों की बुधि में है हमारा भारत छोटा होगा। हम आदी सनातन धर्म वाले ही होंगे। वहां यह समझेंगे नहीं हम देवता धर्म के हैं। वह नाम पीछे शास्त्रों में पड़ता है। वहां तो तुम प्रेक्टीकल में होंगे। कहने की बात नहीं। आज से 5000वर्ष पहले भारत स्वर्ग था। इन लक्ष्मी० का राज्य था। एमआबजेक्ट बुधि में है। यह विश्व में शान्ति का राज्य है जो हम स्थापन कर रहे हैं। परन्तु अजन क्लीयर नहीं समझते हैं। त्रिमूर्ति तो है ही। ब्रह्मपाद द्वारा एक धर्म की स्थापना हो रही है। तुम जितना आगे चलेंगे उतना दुनिया का वायुमंडल शो करता रहेगा। बरोबर विनाश का समय देखने में आता है। बम्स आद काम में आते हैं। मुफ्त पैसा खर्च नहीं करते हैं। बच्चों को गा० हुआ है कुमे एरोपलेन में जाकर सोना ले आते हैं खानयों से। वहां तो खानयां भरपूर हो जाता है। तकलीफ का बात ही नहीं। बिगर मेहनत तुमको सभी कुछ मिलता है। पुराना खटा खोदना करना यहां करते हैं। तो तुमको खुशी बहुत रहनी चाहिए। जितना बाप को याद करेंगे उतनी ही खुशी बढ़ेगी। और भाईयों का कल्याण भी करना है। तो पुरुषार्थ कर तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जाओ और बाप को याद करो। यह सभी बातें तुम ब्राह्मणों की बुधि में है। कितना क्लीयर है। तुम बच्चों को खातरी है, प्रजापिता ब्रह्मा के औलाद हो जो ब्राह्मण बने हो वही देवता बनेंगे। ब्राह्मण कुल होगा भी बहुत बड़ा। परन्तु ब्राह्मणों की राजाई है नहीं। पहले ब्राह्मण कुल बनना है फिर नई दुनिया में जावेंगे। यह अथाह सुख की बातें हैं। यह बैठ सुनाने से दुःख की बात भूल जावेंगे। मनुष्यकितना दुःखी रहते हैं। प्रापर्टी के केस कितने होते हैं। कितनी आजीविका होती है बैरिस्टरों जजों को। कमाई ही कमाई होती है। तो अभी तुम जानते हो पुरानी दुनिया में इस समय अपार दुःख है। फिर होंगे अपार सुख। रावण राज्य की पिछाड़ी(अन्त) है ना। बहुत कोशिश करते रहते हैं। जितनानजदीक आते-जाते हैं तुम बच्चे समझते हो पुरानी दुनिया का विनाश होना है। बाकी थोड़ा समय है। फिर छोटा शरीर जाकर लेंगे। ऐसी बातें बुधि में रहनी चाहिए। जिनको पक्का निश्चय है। हो सकता है कोई2 को निश्चय न भी हो। आते तो हैं हम शिव बाबा के पास जाते हैं। तो निश्चय होना चाहिए। जरूर शिव बाबा नई दुनिया स्थापन करते हैं। निश्चय बुधि बिगर आवेंगे क्यों। परन्तु निश्चय बुधि से भी संशय बुधि हो जाते है। तकदीर में न है वा ब्रह्मचारी बैठ जाती है। पुरा पुरुषार्थ नहीं करते हैं। इस समय सारी दुनिया खास भारत पर राहू की दशा है। जो कंगाल बन पड़े हैं। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करते रहेंगे तो सतोप्रधान बन जावेंगे। परन्तु माया भूला देता है। यह खेल है हार खाना और जीत पाना। यह चलता रहता है। घड़ी2 का घड़ीयाल है जैसे। पारवत में

बच्चों को तैयार रहना चाहिए। जाना है नई दुनिया तो सभी चीज़ पहले से ही ट्रान्सफर कर देना चाहिए। तुम्हारी ही विजय होनी है। बाकी सभी खत्म हो जावेंगे। जितना नजदीक होते जावेंगे उतना ही खुशी का पारा चढ़ता जावेगा। बाप कहते हैं मीठे२ बच्चों, तुमको नम्बरवार याद प्यार देते हैं। अच्छे पुरुषार्थी को अच्छा याद प्यार। कम पुरुषार्थी को कम याद-प्यार। उन में भी कोई कच्चे कोई पक्के हैं। कच्चे-पक्के इस समय ही होते हैं। अनेक बच्चे डायवोर्स वा फारकती देते हैं। माया ऐसी बलवान है जो ऐसे बाप को फारकती दे देते हैं। बाप कहते हैं ऐसी कोई भूल न करना। बेहद के बाप से भी जुदाई कर देते। ~~माया ऐसी बलवान है~~ यह लड़ाई का मैदान है। बाप आते हैं तो तुम्हारी लड़ाई माया से शुरू हो जाती है। अन्त तक चलनी है। आखीरीन विजय तो पानी है जरूर। अभी खुशी मनानी चाहिए। जैसे दीपमाला में खुशी होती है। सफाई कराये कर बत्तियां आदि जगाते हैं। तुम जानते हो अभी स्वर्ग आता है। हमको कितना खुश होना चाहिए। आत्मा पवित्र शरीर भी पवित्र मिलता है। यहां बैठे हो दिल से बात लगती है। बच्चों को बाप मिला है तो बहुत खुशी होनी चाहिए। पुरानी दुनिया को आग लगनी है। हम स्वर्ग में जावेंगे। शास्त्रों में भल क्या भी है। अक्षर कोई करेक्ट नहीं है। अभी अपनी बुधि से समझो। टाईम बाकी थोड़ा है। बाबा को याद करते रहो तो पाप कट जाये। बाप को तो निश्चय है बच्चों को भी निश्चय बुधि बनाते हैं। हम आत्मा हैं। बच्चों को सभी समझाना है हम आत्माओं को अभी बाप को याद करना है। यह याद की यात्रा अभी मिलती है। फिर 5000 वर्ष बाद जावेंगे। फिर मृत्युलोक में लौटना न है। यात्रा पर जाते हैं हम पहुंच ही जावेंगे। तुम्हारी यात्रा देखो कैसी है। मृत्युलोक से अमरलोक में जाने की यात्रा है। इसलिए पवित्र होने लिए बाप को याद करते हो। शरीर से मोह निकलता जाता है। बाप देही अभिमानी बनाते हैं। यह पर छोड़ कर बाकी आत्मा जावेगी। वन्डर है इतनी छोटी सी आत्मा का पार्ट कब मिलता ही नहीं है। पार्ट चलता ही रहता है। दुनिया में किसको इन बातों को मालूम नहीं। हम आत्मा में रिकार्ड कैसे भरा हुआ है। न आत्मा न रिकार्ड देखने में आता। हम एक्ट करते रहते हैं। अच्छा।

रात्रि क्लास 3-7-68 :-

आत्मायें और परमात्मा बहुत दोनों को याद मिली है। जितना समय अलग रहे हैं फिर मिले हैं तो दिल होती है बच्चों को देखें। बार बार देखें, बार२ बच्चों को याद करें। बच्चे भी समझेंगे बाबा को बार बार देखें। यह बाबा तो बड़ा अच्छा है। और फिर यह एक ही बाबुल है। बेहद का बाबुल है। बेहद की सदगति भी करने वाला है। बेहद का राज्य देने वाला भी है बाबुल। सभी का दुःख भी हरते हैं बाबुल। तो यह निश्चय होना चाहिए ना। और खुद है निष्कामी बाबुल। खुद कहते हैं सभी खत्म होना है। हिसाब-किताब चुक्त होना है। विकल्प आये अपने टरना न है। याद में रहेंगे तो खुशी में नाचते उड़ जावेंगे। तुम्हारी शक्ति खुशी से भी अभी की खुशी जीती है। अभी तुम्हारा शान-मान बहुत ऊंचा है। बाप से हिल-मिल रहते हो। बादशाही कर के सतयुग में मिलेगा। परन्तु बाप से पढ़ते हो, बाप साथ रहते हो यह पुरुषोत्तम संगम युग सतयुग से भी अच्छा है। क्योंकि कल्याण कारी है। सतयुग को कल्याण कारी नहीं कहेंगे। अभी बाप तुम्हारा कल्याण करते हैं। यह समय बड़ा अच्छा है। जो बाप को याद करते होंगे, यह चिट-चैट सुनते होंगे कहेंगे हम भी साथ रहें। बाबा से अलग न होवें। आधा कल्प तो रहे हैं देवताओं के साथ। आधा कल्प रहे हैं असुरों के संग। यह है अलौकिक संग। वह तो कामन है। यह पुरुषोत्तम संगम युग सब से ऊंचा है। अगर कोई याद में रहता रहे। अपने से मीठी२ बातें करते रहे। बाप की महिमा गाते रहे। कितनी प्रदर्शनी म्युजियम निकलती है। बाप का गायन तो करना ही है। बाप भारत को ही हेविन बनाते हैं। शिव बाबा इस भारत को पैराडाईज स्वर्ग बना रहे हैं। तो जरूर मददगार भी होंगे। अकेला क्या करेगा। भारत माताएं शिव शक्ति भी है। वन्देमातरम यह है जो विश्व को पवित्र बनाती हैं। तुम अर्थ नहीं समझते हो। वन्देमातरम कौन ? वह धरती को कह देते। माताओं की

जयजयकार नहीं करते। महिमा लायक भी बनना है। सतयुग में यह बातें नहीं होता। इसलिए महिमा लायक बनो तब पूजा लायक भी बनो। महिमा और पूजा अलग2 बात है। वह है भविष्य पद। इस समय तुम सारे विश्व का कल्याण करते हो। वन्देमातरम नहीं गाते। वन्देमातरम। 5000 वर्ष की बात गोया कल की बात है। एक तरफ हो तुम बच्चे। तुम कितने थोड़े हो। मुठ भर हो। पीछे आते रहेंगे बुधि को पाते रहेंगे। तुम समझते हो हम न सिर्फ भारत का सारी दुनिया का कल्याण करते हैं। फिर उस कल्याण कारी विश्व में तुम राज्य करते हो। अभी राजधानी स्थापन हो रही है। जो 2 जास्ती सर्विस करते हैं होंगे, याद की यात्रा में रहते होंगे उस ऊंच पद पावेंगे। यह बातें संगम पर ही होती है। बाप पूछते हैं बताओ कितना खुशी का पारा चढ़ा हुआ है। बाकी थोड़ा समय है। बाबा को यह बाबा तो जितना समय हो उतना ही अच्छा है। सतयुग में ऐसा कोई नहीं होता जो बाप भी हो टीचर भी हो सद्गुरु भी हो। संगम पर ही बाप है जो शिक्षक भी है सद्गुरु भी है। पत्थर बुधि मनुष्य ऐसे हैं तो मुश्किल बुधि में बैठता है। तुम रूहानी स्वदर्शनचक्रधारी हो। वह सोसल वर्कर्स भी अभी निकले हैं। क्रिश्चन के समय नहीं थे। अभी निकले हैं तो तुम स्प्रीचुअल वर्कर्स भी अभी निकले हो। वह जिसमानी सर्विस करते हैं। तुम स्प्रीचुअल। तुम सोसाईटी के रूहानी सेवा करते हो। वह जिसमानी सर्विस करते हैं। आजकल तो सोसल वर्कर्स बहुत ही हैं। मेल भी हैं तो फिमेल्स भी हैं। लाखों की तायदाद में हैं। भारत कोई कम नहीं है। बहुत होंगे। इसमें मेहनत है। पहले2 तो पवित्रता चाहिए। मूल बात है यह। लड़ाइ इसमें होता है। मारें इसमें खाती हैं। यह भी सहन करना होता है। जो जास्ती सहन करते हैं राजाई भी उनको ही मिलती है। भल भातारें बहुत हों। वहां तो बराबर ही होंगे। भातारें पुरुष भी बन सकती है। बाप ने समझाया है एक दो जन्म मेल-एक दो जन्म फिमेल। सदा मेल ही नहीं होंगे। अभी तो बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए। सन्यासी लोग इतना माथा मारते हैं मुक्ति के लिए' तुम कहते हो वह तो हमारा स्वीटहोम है। वह लोग होम(घर) नहीं कहेंगे। तुम जानते हो हमको घर जाना है। इसलिए खुशी होती है। पुराना सम्बन्ध पुरानी दुनिया सभी खत्म हो जावेंगे। आत्मा भी नई सतोप्रधान हो जावेगी। शरीर भी नया। कपड़े भी ऐसे मिलेंगे। सदैव हेल्दी काया कल्प वृक्ष समान रहेंगे। तो तुम बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। नई दुनिया के मालिक तो हम 5000 वर्ष बाद बनते हैं। गिनती कर सकते हो। इतने मास इतने दिन इतने घंटा इतने सेकण्ड। कोई हिसाब निकाले तो स्क्युरेट निकाल सकते हैं। 5000 वर्ष तो पूरे हैं। एक का भी फर्क नहीं पड़ सकता। इसका हिसाब निकालना तो सहज है। बच्चों को बहुत2 खुशी होनी चाहिए। तुम जानते हो कृष्ण पूरी स्थापन हो रही है। पुरानी दुनिया खत्म होनी है। कंसपुरी से कृष्णपुरी होती है। कंस असुरों को कहा जाता है। सब से जास्ती खुशी तो तुम बच्चियों, बूढ़ियों, अबलाओं को होनी चाहिए। अच्छा बच्चों को गुड नाईट और नमस्ते।

रात्रिक्लास 4-7-68:- बच्चे जो बैठे हैं यह जो नई बात है बच्चे समझते हैं बाबा बाबा भी है शिक्षक भी है गुरु भी है। इस याद में सभी को बैठना चाहिए। स्कूल में टीचर को याद करते हैं। गुरु है तो गुरु को याद करते हैं। यहां तो यह वन्डरफुल है ना। बाबा भी है शिक्षक भी है गुरु भी है। सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान सुनाते हैं। टीचर है तो मालूम रहता है कौन सी शिक्षा देनी है। योग भी सिखलाते हैं। योग अलग ज्ञान अलग है। बैठने से बच्चों को खुशी रहेगी। मुखड़ा हर्षित रहेगा। बच्चे समझते हैं हर 5000 वर्ष बाद बेहद के बाप से मिलते हैं बेहद का वर्सा लेने। बहुत बच्चे कहते हैं याद नहीं पड़ता। अरे एक तो याद रखना चाहिए ना। बाबा भी है टीचर भी है। सारा रचना का राज़ बुधि में आ जाता है। अभी वापस जाते हैं। बाप लेने आये हैं। याद की यात्रा से पवित्र बन जाता है। और तुम कहते हो ईश्वर सर्वव्यापी नहीं है' सारी दुनिया कहती है ईश्वर सर्व0 है। यह भी अभी तुम समझते हो कि यहरावण राज्य है। आसुरीराज्य। पर अपन को असुर समझते नहीं है। तुम भी नहीं समझते थे। रावण को जलाते थे। क्या 2 करते थे अपन को ठगते थे। अपन को ठगते2 तुम्हारी जेब खाली हो गई है। बिल्कुलभापूर जेब था। माया ने सारा पाकेट काट लिया। जेबकट होते हैं ना। हम सो का अर्थ भी बाप

2·78

आकर समझाते हैं। हम तो ब्राह्मण हैं फिर हम सोदेवता क्षत्री ... बनेंगे। ठीक समझते हो ना। ऐसे तो नहीं गप्पा समझते हो। अभी फील करते हो शास्त्रों में जो कुछ पढ़ा है वह सभी गप्पे ही थे। खर्चा करते2 जब खाली एकदम इनसालवेन्ट बन गये हैं। भल कितना भी किसके पास धन है परन्तु धन सहित सब खत्म हो जावेंगे। तुम बच्चे तो पाई भर लेते हो। बाप झोली भर देते हैं। बाप झोली भरते हम खाली करते हैं। भक्ति मार्ग में झोली खाली हो जाती है। ज्ञान मार्ग में बाबा झोली भर देते हैं। तब ही बाप समझाते हैं। मनुष्य है बिल्कुल पत्थर बुधि। यहां तो तुम बाप टीचर सद्गुरु तीनों के ही संग में रहते हो। कितना बल मिलता है। खुश होते हो। कई को दिल होता होगी तीन दिन ही सही बाप के सम्मुख आकर रिफ्रेश होकर जावेंगे। बाबा की मना नहीं है। हां सर्विसएबुल हो जो बाप समझे रिफ्रेश हो जाये कमाल करेंगे। सर्विस नहीं करते हैं वह आकर क्या करेंगे। सर्विसएबुल पण्डा बन कर ले आते हैं। बाप के सम्मुख सुन कर रिफ्रेश होते हैं। वहां जाने से फिर वह रिफ्रेशमेन्ट रहती नहीं। वायुमंडल गोरखधंधे की रहती है। तुम बच्चे घर की तो यहां बातें सुनते नहीं हो। तुमको तो सर्विस का ही ओना रहता है। सर्विस का समाचार बाप के पास न जावेंगी तो बाप हन्टर लिखेंगे। यह है सच्चा ज्ञान। शंकर के लिए समझते हैं वह झोली भरते हैं। क्योंकि साकार देखते हैं। शिव तो है निराकार वह झोली कैसे भरते हैं। एक तरफ कहते हैं विनाश करते हैं। अभी विनाश करे या झोली भरे। भक्ति मार्ग में तुम्हारा जेब कट जाता है। अभी तुम आये झोली भरने। कल्प2 हम बाप के पास धनवान बनने जाते हैं। बाप आते हैं ड्रामा प्लैन अनुसार। पुकारें न पुकारें उनको आना ही है। पायन्ट्स अच्छी समझाने की है। एक पायन्ट भी पक्की कर दी तो बेड़ा पार है। बेहद के बाप को याद करो बेड़ा पार। बेहद के बाप से बेहद का जेब भर जाता है। वहां तुम्हारी आयु भी बड़ी हो जाती है। इतनी बड़ी जो कब काल खा न सके। काल को हुकुम नहीं है आने लिए तुम काल पर जीत पहनते हो। वह सुनने रिफ्रेश होने लिए तुम आते हो। बाप भी कहते हैं आज तुमको नई2 गुह्य बातें सुनाता हूं। कितनी अच्छी रीत समझाते हैं। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। उन में भी तुम मुंझते हो। कैसे अपने को आत्मा समझें। अरे यह तो बहुत सहज है। आत्मा भृकुटि के बीच सितारा है। बाप को परमआत्मा कहा जाता है। फर्क तो है नहीं अलफ को जाना और बे बस। बाप से यह मिलता है। बाप चक्र का राज ऐसे समझाते हैं। गायन भी है कुबजाएं भीलनियां भी स्वर्ग के मालिक बनती हैं। यहां आये थे स्वर्ग के मालिक। मधुबन का तो गायन है। यहां आते हो बाप से खजाना लेने। तुम बच्चों को तो धन भी मिलता है। बड़ी आयु भी मिलती है। काया निरोगी बन जाती है। जिनकी उपमा करते आये हो वह अभी तुम बनते हो। दुनिया में तो किसको भी पता नहीं है। यह भी नहीं जानते थे। तुम बच्चों को ख्याल रखना चाहिए आकर बाबा हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। विश्व के मालिक बनाने वाले को याद भी करते आये हो भक्ति मार्ग में। तुम कहां भी जाकर देखेंगे शिव बाबा को फूल दूध आदि चढ़ाते हैं। ल0ना0 के मंदिर कहेंगे हम तो अभी यह बन रहे हैं। राम सीता के मंदिर में जावेंगे अगर नापास होंगे तो यह बनेंगे। बुधि में है ना। यह सारी दुनिया मैमिट्टी में मिल जावेगी। फिर तुम बच्चों को सभी कुछ नया मिलेगा। सभी चीज नया। यहां तो ही आदि के लिए कितना माथा मारते रहते हैं। वहां तो हैं ढेर हीरे। महलों में बड़े2 हीरे रहते हैं। तुम सा0 को भी करते निश्चय भी करते हो हम नर से ना0 बनेंगे। चित्र भी है ना। आजकल तो झूठे हीरे आदि एकसे निकले हैं जो कोई समझ न सके। सच और झूठ कुछ समझ नहीं सकते। यह है युध का मैदान। युध होती है यह भी कोई समझते नहीं। याद की यात्रा में माया के विघ्न पड़ते हैं उनको हटाते रहना है। अपने कर्म इन्द्रियों से कोई विकर्म नहीं करना है। नहीं तो सैणा डन्ड। पक्के बनते जावेंगे। हम आत्मा हैं हम आत्मा हैं। आत्मा को याद करने से बाबा पक्का याद आवेगा। समझेंगे आत्मा सभी संस्कार ले जाती है। आत्मा ही कहती है हम एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। अच्छा बच्चों को गुडनाईट और नमस्ते।